अपभ्रंश साहित्य का इतिहास

इकाई - 2. अपभ्रंश महाकाव्य ।

Q.1- पउमचरिउ की भाषा एवं शैली की विशेषता पर प्रकाश डालें ?

Ans- अपभ्रंश में राम काव्य के प्रथम कवि स्वयंभू जी है। पउमचरिउ भी स्वयंभू का अपभ्रंश भाषा में लिखा हुआ रामायण महाकाव्य है।

कुछ शताब्दियों तक प्राकृत में विभिन्न प्रकार का साहित्य लिखा जाता रहा। यह एक वास्तविकता है कि लोक भाषा बदलती-चलती है और जो बदलती-चलती है वही लोक भाषा होती है। धीरे-धीरे एक नई भाषा अपभ्रंश का जन्म लोक भाषा के रूप में हुआ और इसकी पाँचवी छठी शताब्दी में वह अपभ्रंश भाषा साहित्य का अभिव्यक्ति के लिए सशक्त माध्यम बन गई।

अपभ्रंश का अर्थ है लोक-भाषा या जनबोली। समान्य लोगों की बोल-चाल की भाषा ही जन बोली होती है। आचार्य भरत मुनी ने जिस भाषा को उकार बहुला कहा है वह हिमालय प्रदेश से लेकर सिंध तथा उत्तर पंजाब तक प्रचलित थी। इस उत्तर-पश्चिमी भारतीय बोली को ही संस्कृत वैयाकरणों ने अपभ्रंश नाम दिया क्योंकि लोक भाषा में विभिन्न क्षेत्रों में एक ही अर्थ में विभिन्न शब्द थे।

पं- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने अपभ्रंश का अर्थ - नीचे को खिसकना (लोक में विकसित

P.T.O

होना बताया है। उन्होंने लिखा है कि अपभ्रंश या देशी भाषा और कुछ नही बाँध से बचा हुआ पानी है या वह जो नदी-मार्ग पर चला आया बाँध न गया। इनका आशय है कि संस्कृत शब्द एक है तो व्यार प्रवाह में पानी की तरह सरकने वाले अपभ्रंश शब्द अनेक माना संस्कृत शब्द है उसका मातु, माई और माओतक पहुंच जाना अधिक मधुर बनने के लिए है। शब्दों का नयारूप लेना दूषण नही भूषण है। ध्यान देने की बात है जो अपभ्रंश शब्द इसी से दो शताब्दीपूर्व अमाणिनीय प्रयोग के लिए प्रयुक्त होता था, वही ईसा की छठी शताब्दी तक आते-आते एक साहित्यिक भाषा संज्ञा बन गया। यह अपभ्रंश लगभग सभी भारतीय आर्य भाषाओं की जननी कही गयी है अपने व्यापक अर्थ में अपभ्रंश ऊस उस लोक भाषा की बोतक है जो संस्कृत से इतर है। इस तरह अपभ्रंश सभी लोक बोलियों का सामान्य नाम है। जन भाषा अपभ्रंश लगभग छठी शताब्दी से पन्द्रहवी शताब्दी तक साहित्य का भाषा के रूप में प्रयुक्त होती रही है।

अपभ्रंश भाषा के लेखक स्वयंभू जी ने राम कथा एवं पउमचरिउ महाकाव्य का विवेचना महत्वपूर्व रूप से किया है।